“पानी का महत्तव”

जून की भीषण तपती धूप में कच्ची सड़क किनारे घड़े मटके लिए खड़े हर उम्र के लोग। कुछ ऐसा नज़ारा था 2022 जून की उस रोज, राजस्थान के पाली जिले में स्थित सोनाई लाखा गांव (ब्लॉक रोहट) का। पानी का टैंकर की राह देखते पसीने से लटपट लोग जिसमे कई बच्चे भी शामिल थे उन्हें इस प्रकार देखना ही हमारे लिए काफी अफसोस भरा था। Phed द्वारा लगाए गए GLRs की हालत भी जर्जर हो गई थी।

गांव के भीतर जाने पर गांव का सर्व कम्युनिटी तालाब जिसे आमतौर पर राजस्थान में नाडी कहा जाता है, वह भी खराब हालत में दिखा। बढ़ते समय के साथ परंपरागत जल संरक्षण के तरीके लगभग खत्म होते दिख रहे हैं।
तालाब का आवक एरिया (कैचमेंट) कूड़े का सामूहिक पात्र बनकर रह गया है।

जब हमारी संस्था करुणालय फाउंडेशन की फील्ड टीम ने VDC और पंचायत समिति से बात की तो, सरपंच महंत किशन भारती जी ने बताया कि पेयजल आपूर्ति न होने से मवेशियों की मृत्यु भी हो रही हैं और अधिकारियों को काफी बार लिखित में समस्या बताने पर भी समस्या का निवारण नहीं हुआ है।

जब हम गांव में घूमे तो देखा कि कुछ महिलाएं भरी दुपहर में ही उस नाडी में स्थित बेरियों (percolation wells) से पानी लेने जा रही हैं। वहां जाने पर देखा की पानी सतह तक जा चुका है कुछ बेरियां पूरी तरह से सूख चुकी है। और जिसमे कुछ पानी है वो पीने लायक नहीं। फिर भी महिलाएं उससे पानी भर भर कर के ले जा रही थी।

नाडी में स्थित बेरियों (percolation wells) से पानी भरती महिलाएं

गांव के एक बुजुर्ग जोगाराम (बदला हुआ नाम) से बात करने पर उन्होंने बताया की इस पूरे ग्राम पंचायत में जिसमे 7 ढाणी और एक गांव आता है और करीब 5000 के आसपास जनसंख्या है एवं 2000 से ज्यादा मवेशी। (डाटा को सरपंच ने समर्थन दिया) इन सभी का जीवन बस फिलहाल 2 टैंकर पर निर्भर है। प्रतिदिन लोग लाइन लगाकर टैंकर के आने का इंतजार करते हैं। इस समस्या के कारण लोग मवेशी नहीं पाल रहे और पलायन करने पर भी मजबूर हो रहे। और गंदे पानी के कारण अनेक रोग भी सामने आ रहे।

स्थिति का जायजा लेने के बाद करुणालय की टीम ने मुख्य तालाब को नवीनीकरण करने का जिम्मा उठाया जिससे गांव के सभी लोग से भरपूर समर्थन मिला। खुदाई कर तालाब के ढांचे को मजबूत किया गया आवक को साफ किया है । खुदाई के खर्चे का भर संस्था ने और मिट्टी को तालाब से बाहर ले जाने का कार्य गांव के लोगो ने मिलकर किया। करीब 15 दिन चले इस कार्य के अंत में तकनीकी टीम द्वारा वाटर होल्डिंग कैपेसिटी को मापा गया, जिसके नतीजे ये थे की 1.5 गुना वृद्धि हुई है पानी की भराव क्षमता में और तकरीबन 15 हजार क्यूबिक मीटर मिट्टी को निकाला गया।

गांव के लोगो ने तालाब किनारे वृक्षारोपण का निर्णय किया और आवक को साफ रखने हेतु पंचायत ने कड़े नियम बनाए। पाली जिले में पेयजल की समस्या की इससे भी आंका जा सकता है की इन भीषण गर्मी के दिनों में पानी की ट्रेन द्वारा कई हिस्सों तक पानी पहुंचाया जाता है।

गांव वासियों की सकारात्मक दृष्टिकोण को देखते हुए फाउंडेशन ने एक और नाडी जो की मवेशियों के लिए थी उसपर भी काम किया। प्रभाव स्वरूप मानसून में अच्छी बारिश होने पर दोनो तालाब पूरे भरे और मवेशियों और गांव के लोगो को साफ पानी मिला।

आज नाडियों के नवीनीकरण का ये कार्य करुणालय द्वारा 5 जिलों के 90 से भी ज्यादा गांवों को कवर करते हुए 100 से भी ज्यादा नाडी को सफलतापूर्वक नवीनीकरण कर चुका है। और 70 हजार से भी याद लोगो को इससे लाभ हुआ है।

आइए फिर से मिलकर अपने सांस्कृतिक विरासत को संजोए और जल संरक्षण के परंपरागत रूपों को पुनः अपनाएं।

"मैं न जानू जात बिरादरी, मैं रंगभेद से भी परे हूं...
कभी कभी शीतल धारा, कभी कभी प्रलय हूं।
हूं कभी सागर में मैं, कभी आकाश में विलय हूं...
व्यर्थ बहाया तूने मुझे मनुष्य, तेरी तो आंखों में भी मैं हूं।"

यशवंत सिंह
करुणालय सोशल वेलफेयर फाउंडेशन, जोधपुर।